



पाठ – एक राजा हरिश्चन्द्र



त्रेता युग में बड़े धर्मात्मा, प्रजापालक तथा कीर्तिमान एक राजा थे। उसका नाम था राजा हरिश्चन्द्र। उनके राज्य काल में कभी अकाल नहीं पड़ा और किसी की अकाल मृत्यु नहीं हुई थी। उनके राज्य में लोग धर्म-परायण होते थे तथा कोई भी लोग धन-लोलुप और मदहोशी नहीं होते थे। एक दिन राजा हरिश्चन्द्र वन में शिकार के लिए निकले। कुछ समय के बाद उन्होंने वन में स्त्रियों की भयभीत भरी आवाज सुनी। राजा ने उसे एक व्यक्ति द्वारा नारियों पर अत्याचार समझा। इसलिए उन्होंने अनजान से अचानक 'दुराचारी, पापाचारी' शब्द कहा। वास्तव में वह आवाज महर्षि विश्वामित्र के योग साधना से भयभीत होकर ही दी गई दिशाओं की विलाप की आवाज थी। राजा हरिश्चन्द्र को यह सब मालूम नहीं था।

राजा का वह शब्द सुनकर महर्षि विश्वामित्र बहुत क्रोधित हुए। तुरन्त विश्वामित्र बोले— ‘दुरात्मा ! वहीं खड़े रहो।’

राजा ने भयभीत होकर विनयपूर्वक महर्षि के चरणों में गिरकर प्रणाम किया और कहा — “भगवन ! आप मेरा अपराध न माने। प्रभो, यह मेरा धर्म था। अपने धर्म की रक्षा में लगे मुझ जैसे राजा पर आपको क्रोधित नहीं होना चाहिए।”

राजा और महर्षि दोनों के बीच धर्म की रक्षा और धर्मशास्त्र के अनुसार दान पर तर्क-वितर्क हुआ। अन्त में विश्वामित्र ने कहा — “ राजन ! अगर तुम राजधर्म की रक्षा हेतु दान देना ही अपना परम धर्म मानते हो तो मैं दान पाने की इच्छा करनेवाला ब्राह्मण हूँ; अपनी इच्छानुसार मुझे दान दो।”



तब राजा ने कहा — “ भगवन ! मैं आपको क्या दूँ ? निस्संकोच कहिए।”

विश्वामित्र ने कहा — “ वीरवर ! तुम स्वयं, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे पुत्र के अलावा तुम्हारा सब-कुछ मुझे दान में दो।”

महर्षि का वचन राजा ने स्वीकार किया। उनके मुख पर दुख या चिन्ता का कोई निशान नहीं था।

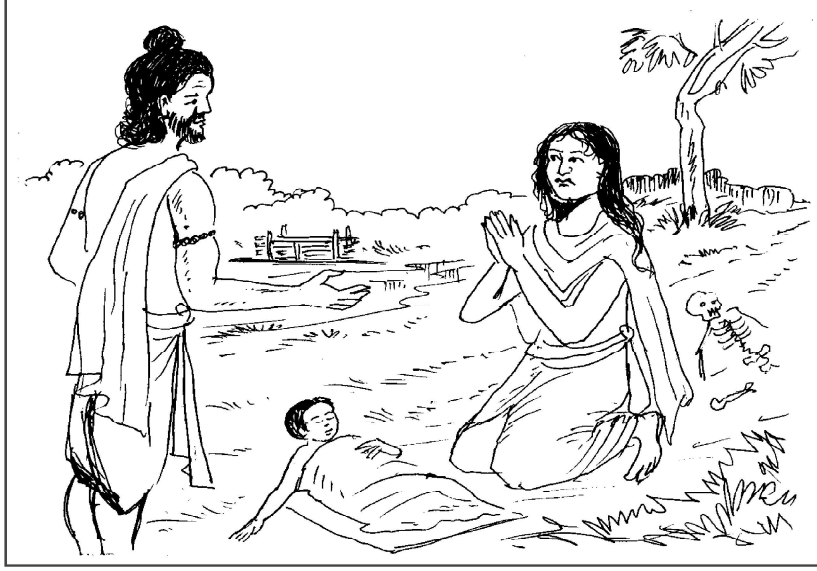
विश्वामित्र ने आगे कहा – “ राजन ! यह नगर, यह भूमि, यह वनस्पति और सारी चीज मेरी हो गई। जहाँ-जहाँ मेरा प्रभुत्व है वहाँ से तुम, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारा पुत्र निकल जाओ। और हाँ, जाने से पहले मेरी दक्षिणा देना। मेरी दक्षिणा दिए बगैर तुम जा नहीं सकते।”

कोई उपाय न सूझकर राजा ने अपनी पत्नी शैव्या और पुत्र रोहिताश्व को एक ब्राह्मण के हाथ बेच दिया। इसमें भी विश्वामित्र की दक्षिणा पूरी न हो पाई। अतः उन्हें बाध्य होकर एक चण्डाल के हाथ बिकना पड़ा। वही हुआ जो भाग्य में होना लिखा था। वे अपनी पत्नी और अपने पुत्र से बिछुड़ गए। राजा स्वयं एक चण्डाल के हाथ पड़ जाने के कारण श्मशानघाट पर मृतशरीर से कपड़े संग्रह करने का काम करने लगे। वे काशीपुरी की दक्षिणी श्मशान-भूमि में बने शवगृह में दिन-रात काम करते रह गए। वहाँ के वातावरण और दृश्य भयभीत और दुखभरे थे। राजा वहाँ अपनी पत्नी और अपने पुत्र को स्मरण कर विलाप करते रहे। फिर भी वे सदा सच्चिदानन्द स्वरूप, सम्पूर्ण जगत के सृष्टिकर्त्ता श्री भगवान सत्यनारायण विष्णु, देवराज इन्द्र न्यायके देवगुरु बृहस्पति का स्मरण करना नहीं भूले।

राजा हरिश्चन्द्र बहुत ही दुखित अवस्था में दिन-रात काट रहे थे। उनके शकल-सूरत और रूप-रंग सब बदल गए। उनको पहचान पाना बहुत मुश्किल हो गया था।

उनका पुत्र रोहिताश्व जो अपनी माता के साथ था, एक सर्प के काटने से मर गया था। शैव्या अपने पुत्र रोहिताश्व का मृत-शरीर उस श्मशान घाट पर ले आई जहाँ राजा हरिश्चन्द्र दाह-कर्म कर रहे थे। महारानी शैव्या अपने मृत पुत्र को गोद में लेकर विलाप कर रही थीं। उनका शरीर अत्यन्त दुर्बल हो गया, बाल बिखर गए, धूल जम गई तथा

शरीर की कान्ति मलिन हो गई। वे बार-बार अपने पुत्र को पुकार कर रो रही थीं। राजा हरिश्चन्द्र कफन और कपड़े पाने की आशा से शैव्या के करीब आए, लेकिन दोनों एक दूसरे को पहचान नहीं पाए।



रानी ने विलाप करते हुए कहा— “ हे नाथ ! आप कहाँ हैं ? ओ विधाता ! तूने सब कुछ नाश कर दिया। तूने राजा हरिश्चन्द्र पर कौन-सी दुर्दशा नहीं की !”

रानी का यह वचन सुनते ही राजा ने दोनों को पहचान लिया। उन दोनों की अवस्था देखकर राजा अत्यन्त दुख के कारण मूर्च्छित हुए। रानी भी राजा को पहचान कर और अचानक अपने सामने प्रकट पाते ही धरती पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। थोड़ी देर बाद दोनों की चेतना आ गई। रानी दुख से आक्रान्त होकर विलाप करने लगी — “ महाराज, क्या यह सत्य है या स्वप्न ? आप इसे जैसा समझते हैं, बता दीजिए, मेरी बुद्धि भ्रष्ट होती जा रही है।”

राजाने कहा — “ प्रिये, यह सब भगवान की लीला ही समझो। इस वक्त तो देवी-देवताओं का स्मरण करना है; उनका स्मरण करके ही इस बन्धन से हमारी मुक्ति

होगी। इसलिए भगवान का नाम लो और सदा भगवान को स्मरण करो। हम ऐसे ही जीवन भोग रहे हैं, इसके लिए किसी का अपमान नहीं करना है। कभी अभिमान में उस ब्राह्मण की निन्दा नहीं करनी है। तुम अभी उस ब्राह्मण के घर चलो। मैं पुत्र रोहिताश्व के शव को अग्निदाह कर भगवान के प्रति अर्पित कर दूँगा।”

उन दोनों के दुख की सीमा न रही। वे भी संसार से सदा के लिए चले जाना चाह रहे थे। उसी समय देवराज इन्द्र उनके सामने प्रकट हुए और रोहिताश्व को अमृत प्रदान कर फिर से जीवित कराया। उसी समय धर्मराज यम तथा सभी देवतागण उनके सामने आ पहुँचे। सभी ने उन्हें वरदान दिया।

महाप्रतापी विश्वामित्र ने रोहिताश्व को अयोध्या का राजा-अभिषेक किया। सभी नगरवासियों ने देवतागण को प्रणाम किया। महाराजा हरिश्चन्द्र और शैब्या स्वर्ग को चले गए।

कठिन शब्दों के अर्थ—

अकाल	= अशुभ समय, अभाव, भुखमरी।
दुरात्मा	= दुष्ट प्रकृतिवाला, नीच।
निस्संकोच	= संकोचरहित।
बाध्य	= पीड़ित, मजबूर, विवश।
विलाप कर रही थीं	= बिलख-बिलख कर रो रही थीं।
कान्ति	= सौंदर्य, चमक।
करीब	= पास, निकट।
आक्रान्त	= जिसपर हमला किया गया हो।
भ्रष्ट होती जा रही है	= मार्ग से विचलित होती जा रही है, ध्वस्त होती जा रही है।
भोग	= कर्मफल भोगना।
अपमान	= तिरस्कार, निरादर।

प्रश्न-अभ्यास

1. अनजान ही किए गए कार्य से राजा हरिश्चन्द्र को क्या फल मिला ?
राजा ने क्या सोचकर वह कार्य किया था?
2. महर्षि विश्वामित्र क्रोधित क्यों हुए और उसने क्या किया ?
3. महर्षि विश्वामित्र ने राजा हरिश्चन्द्र से दान में क्या माँगा ?
4. दान लेकर महर्षि विश्वामित्र ने राजा से क्या करने के लिए कहा ?
5. दान देने के बाद राजा हरिश्चन्द्र, शैव्या और पुत्र रोहिताश्व के जीवन में हुई स्थितियों को संक्षेप में लिखिए।
6. राजा हरिश्चन्द्र ने शैव्या के प्रति क्या आश्वासन दिया ?
7. राजा हरिश्चन्द्र के जीवन से आपको क्या प्रभावित होता है ?
8. 'राजा हरिश्चन्द्र अपने किए का फल भोग रहे थे।'
आप इससे सहमत है या नहीं ? अगर सहमत है या असहमत है तो क्यों ?
